नई शिक्षा नीति–2020

कृषि छात्रों हेतु ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव (रावे) के प्रभावी क्रियान्वयन कौशल हेतु

पांच दिवसीय सी०एस०ए०यू० सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन मॉडयूल

(CSAU PRA Module for RAWE Students)

गाँव को पहचानकर गाँव की आवश्यकताएँ, सम्भावनायें एवं क्रियान्वयन जानकर कृषि शिक्षा को व्यवहारिक एवं व्यवसायिक बनाने हेतु मॉडयूल

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

नई शिक्षा नीति–2020

कृषि छात्रों हेतु ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव (रावे) के प्रभावी क्रियान्वयन कौशल हेतु

गाँव की प्राथमिक सूचनायें लेने की सी0एस0ए0 सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (सी0एस0ए0यू0 पी0आर0ए0) विधा

पाँच दिवसीय मॉड्यूल

(CSAU PRA Module for RAWE Students)

प्रधान सम्पादकः

डॉ0 डी0आर0 सिंह
कुलपति
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

सम्पादकः

डॉ0 जितेन्द्र सिंह
वैज्ञानिक (सस्य),
कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

डॉ0 धर्मराज सिंह
अधिष्ठाता, कृषि संकाय
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

डॉ0 ए0के0 सिंह
वरि0वैज्ञानिक / अध्यक्ष,
कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

तकनीकी सहयोग :

श्री विवेक कुमार दुबे
मौसम प्रेक्षक
कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर

गाँव की प्राथमिक सूचनायें लेने की सी0एस0ए0यू0 सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (सी0एस0ए0पी0आर0ए0) विधा

पाँच दिवसीय मॉड्यूल

(CSAU PRA Module for RAWE Students)

कृषि स्नातक छात्र सप्तम सेमेस्टर व अन्तिम वर्ष में प्राप्त कृषि शिक्षा को व्यवहारिक एवं कौशलपूर्ण बनाने हेतु गांव में जाकर 91 दिन निरंतर ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव प्राप्त करते हैं। गांव में कृषि कार्य अनुभव प्राप्त करने हेतु सर्वप्रथम गांव व गांव की सामाजिक एवं संसाधन, कृषि प्रणाली, आवश्कतायें जानने की आवश्यकता होती है। जिसके लिए आप को गांव में जाकर सर्वप्रथम गांव वालों के साथ सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन अभ्यास करना आवश्यक है।

गांव में आप प्राथमिक सूचनायें कैसे प्राप्त करें, इसके लिए पांच दिवसीय सी0एस0ए0यू0 सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (Five days CSAU PRA Module) तैयार किया गया है। आप सब कृषि छात्र पहले आश्वस्त हो ले कि यह अभ्यास ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव (RAWE) में अतिरिक्त कार्य न होकर आपको कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त करने का कौशल है। इस अभ्यास को करके जब गांव की सामाजिक एवं संसाधन सूचनायें संकलित कर लेंगे तब आप वास्तविक ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव के उद्देश्य को पूरा कर अपने को दक्ष व कौशलपूर्ण बना सकेंगे।

इस सी0एस0ए0यू0 सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (CSAU PRA Module) कृषि शिक्षा के उपरान्त जब आप किसी सेवा में कार्यरत होंगे जैसे– कृषि वैज्ञानिक, कृषि अधिकारी, कृषि प्रसार कार्यकर्ता व योजनाओं, परियोजनाओं के कर्मी होने पर उपयोग कर सकते है। इस पी0आर0ए0 विधा को निम्नलिखित कार्यक्रमों में सदैव उपयोग कर अपनी कार्यकौशल एवं दक्षता को लागू करने में सफल रहेंगे।

1. कृषि शोध, प्रसार योजना एवं परियोजनाओं के संचालन हेतु चयनित गाँवों को कृषि प्रणाली की वर्तमान स्थिति, तकनीकी अन्तर, एवं संभावनाओं तथा शोध प्रयोगो की आवश्यकतायें तय करने एवं कृषकों की सहभागिता आधारित परियोजनाओ में।
2. कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषि विकास हेतु चलाये जाने वाले कार्यक्रमों व कृषि योजना तैयार करने। कृषि प्रणाली की संभावना एवं तकनीकी अन्तर तय करने में इस विधा का प्रभावी उपयोग कर सकते है।
3. कृषि विश्वविद्यालय द्वारा कृषि विकास हेतु चलाये जाने वाले कार्यक्रमों की आवश्यकता कारण एवं संभावनाओं का गाँव में स्तर क्या है, सम्बन्धित वैज्ञानिक टीम को प्रयोग हेतु।
4. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद उपकार व प्रदेश सरकारों द्वारा कृषि विकास हेतु माँगी गयी परियोजनाओं को तैयार करने एवं क्रियान्वयन में प्रभावी एवं वास्तविक प्रयोग हेतु।
5. सरकारी विभाग व स्वयं सेवी संस्थाओं के सहयोग से समस्त चलायी जा रही परियोजना एवं कार्यक्रमों, गाँव की सूचनाओं एकत्र करने में बल मिलेगा।

6. सहभागिता विषयक संचालित समस्त कार्यक्रमों हेतु गाँव की सूचनायें जो एकत्र करने व जमीनी क्रियान्वयन हेतु SWOT तय करने में उपयोगी विधा है।

7. किसान उत्पादक संगठन के कार्यकर्ताओं के कार्य कौशल बढ़ाने एवं कार्य भार कम करने हेतु ये विधा बहुत ही उपयोगी है।

गाँव में विभिन्न कार्यक्रमों, कार्यक्मों के आधारित जो आवश्यकतायें तय करनी हो उनके अन्दर क्या बल है कमियॉ है, संभावनायें तथा खतरे है को तय करने हेतु SWOT करने में ये सहभागी विधा काम आयेगी।

बल (Strenght) 1- 2- 3-	कमियां (Weaknesses) 1- 2- 3-
संभावनायें (Opportunities) 1- 2- 3-	खतरे (Threats) 1- 2- 3-

इस विधा से प्रसार कार्यक्मों में लगे जिला, ब्लाक ग्राम स्तर सभी सदस्यों को दक्ष कर दिया जाये तो सम्बन्धित कार्यक्मों को नियोजित करने एवं क्रियान्वयन करने में कम कार्यभार के साथ सफलतापूर्वक संचालित करने में बल मिलेगा। क्योंकि ये विधा सहभागी है, तथा मित्रवत महौल देने में सहायक है।

रावे गाँव में

रावे गाँव की कृषि प्रणाली एवं कृषि परिस्थितीकीय की वास्तविक जानकारी हेतु अपने पूरक उद्देश्य से गाँव में ही सभी उम्र जाति के लोगों के साथ बैठकर जो सूचनाएँ एकत्र करें तथा गाँव में ही गाँव की आवश्यकता का खाका तैयार करते हैं उसे हम प्रभावी ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव कहेंगे।

कैसे तैयार करेंगें

ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव के प्रभावी अभ्यास हेतु व अन्य विशेष कृषि विकास योजना गाँव में संचालित करने हेतु जो नामित कृषि छात्र सदस्य, प्रसार कार्यकर्ता, स्वयं सेवी संस्था के कार्यकर्ता, ग्राम के कृषक भाइयों के साथ मिलकर किया जायेगा। अतः सभी लोग मिलकर विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से गाँव में ही संभावनायें, आवश्कतायें एवं समस्याओं का निर्धारण करते है। प्राप्त समस्याओं, कारण एवं संभावनाओं के आधार पर समस्त क्रियाकलापों का नियोजन तथा प्रधान क्रियाकलापों के लक्ष्य, मापदण्ड एवं निस्तारण हेतु कर्तव्यों एवं जिम्मेदारियों का निर्धारण करेंगे। इस तरह तैयार सहभागी प्रबन्धन युक्त सूचनाओं को एक संकलित रूप देकर दस्तावेज तैयार करेंगे। मुद्दों का निर्धारण अधिकतर मुद्दे प्रत्येक ग्राम में एक से होते है जो सामान्य मुद्दे (Common Issues) कहे जाते है। परन्तु कुछ मुद्दे गाँव की भौगोलिक एवं सामाजिक स्थिति के अनुरूप अलग अलग होते है अतः गाँव में बैठकर एवं भ्रमण कर जब सूचनायें एकत्र करते है तभी रावे की वास्तविक क्रियान्वयन की रूप–रेखा सुनिश्चित हो जाती है। रावे गांव से वास्तविक

क्रियान्वयन हेतु सहभागी सूचना को एकत्र करने हेतु हम ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव (रावे) के प्रभावी संचालन हेतु सर्वप्रथम सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (PRA) अभ्यास करेंगे जो पांच दिन का अभ्यास है जिसे रावे गांव में सूचना हेतु प्रथम, द्वितीयक सूचना के आधार पर लक्ष्य के अनुरूप तय गाँव में ये अभ्यास करेंगे। रावे उसी ग्राम में करेंगे, जिस ग्राम को कृषि छात्रों को रावे हेतु आवंटित किया गया है।

शुरूआत :

कृषि छात्र गांव जाकर सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन प्रारम्भ करें। ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव के उद्देश्य को ध्यान रखते सम्पूर्ण गाँव की समस्याओं, आवश्कताओं के अनुरूप सूचनायें ग्रामवासियों के सहयोग से लेना चाहिये, अतः अपने उद्देश्य परिचय के साथ प्रारम्भ करेंगे जिससे पर्याप्त समय देकर क्रमबद्ध तरीके से समस्त ग्रामवासियों के सहभागिता से एक सूचना संकलन तैयार की जा सके कृषकों के बीच पाँच दिवसीय कार्यक्रम तय करने हेतु परिचर्चा करेंगे और कृषकों की राय से दिन व समय तय कर पाँच दिन का अभ्यास सम्पन्न करेंगे। चयनित गाँवों में पांच दिन के अभ्यास का कार्यक्रम तय करने के बाद जिस दिन से अभ्यास शुरू करेंगे तो पांच दिन तक लगातार करेंगे जिससे सबी स्मृतियां ताजी रहे।

पहले दिन का सहभागी अभ्यास

पहले दिन रावे गाँव में जब प्रवेश करते है तब मात्र सभी को इतना पता चले कि ये एक कोई योजना ऐसी चलाना चाहते है जो हमारे साथ तय होगी ग्राम में जैसे गांव में लगभग 100 हेक्टेअर ऊसर है या असिंचित है, बीहड़ है व अच्छी भूमि है या कुछ भूमि ऐसी है जिसका सुधार किया जाना जरूरी है या 200 हेक्टेअर भूमि एक फसली है आदि या पशु पालन बहुत ही निम्न है या कृषि विकास हेतु सम्भावनायें क्या है।

गाँव में पहले दिन मित्र व एक दो वाकपटुता व जल्दबाजी में सूचना देने की उत्सुकता वाले लोग नहीं रखना है बल्कि सर्वप्रथम ग्राम प्रधान से मिलकर अपना परिचय एवं संक्षिप्त में अपने उद्देश्य का परिचय देकर गाँव की जानकारी लेंगे और टीम में ग्राम प्रधान और तब तक आ गये ग्रामवासी जो सम्मिलित हो गये और इन सबके साथ गाँव में अपने उद्देश्य के अनुरूप सूचना लेने हेतु अभ्यास करना शुरू करेंगे कि गाँव की एवं गाँव से सम्बन्धित कृषि क्षेत्र की जानकारी देने हेतु समस्त समुदाय जाति व उम्र के लोग सम्मिलित हो सके महिलाओं की भागीदारी भी रहे इसका भी ध्यान रखना है। अपने लक्ष्य आधारित सूचनायें प्राप्त करने हेतु सहभागी वातावरण तैयार करेगे जिसके लिये हम उपस्थित समुदाय से रूचिकर साथी चुनकर गाँव भ्रमण करेंगे तथा भ्रमण दो उद्देश्य से गाँव में लोगों को जोड़ने के लिये तथा गाँव की समाजिक स्थिति जानने हेतु भ्रमण करेंगे। ग्रामवासियों को विश्वास में लेने का प्रथम प्रभाव जमाना आवश्यक हैं कृषकों के साथ भ्रमण करे और जगह–2 मोहल्ले–2 जाकर लोगों को एक साथ सम्मिलित होने हेतु प्रेरित करेंगे।

प्रत्येक गाँव मुहल्ले, के आधार पर बसा होता है और उसमें कभी–कभी आपसी मतभेद, झगड़े के कारण पार्टियों में भी बंटा होता है। जिसको ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव के दृष्टिकोण से ग्राम प्रधान के नेतृत्व में लोगो के साथ गाँव के प्रत्येक मुहल्ले–2 में जाकर मिले तथा लोगों के साथ चबूतरों में बैंठकर अपना परिचय देने एवं उनका परिचय लेने का काम करें।

पहले दिन गाँव की स्थिति एवं ग्रामवासियों से परिचय बढ़ाने का कार्य कर अगले दिन यदि गाँव में मजरा है तो वहॉ भी भ्रमण का कार्यक्रम तय करेंगे जिसमें तय लोगों के साथ भ्रमण का समय तय कर अपने गंतव्य स्थान के लिये रवाना होंगे। इस प्रथम दिन में जो भी भ्रमण के दौरान सूचनायें प्राप्त हो उनको नोट करेंगे।

दूसरे दिन का अभ्यास (मजरा क्षेत्र का भ्रमण)

पहले दिन की सूचनायें व निर्णय के अनुसार पहले जुड़े सदस्यों के साथ मुख्य गाँव में यदि मजरा है तो मजरों की संख्या के आधार पर ग्राम प्रधान अन्य ग्रामवासियों को स्वयं समय देने का आग्रह करें या ग्राम प्रधान तथा सामाजिक स्वभाव के ग्रामवासियों के साथ मजरों का भ्रमण करेंगे। मजरों का भ्रमण अपने किसान उत्पादक संगठन लक्षण को ध्यान में रखकर करेंगे।

मजरों का भ्रमण के समय ऐसा रास्ता तय किया जाय कि कृषि क्षेत्र रास्ते पर ही पड़े चाहे मार्ग कुछ लम्बा हो मजरों का भ्रमण कर वहाँ के लोगों से परिचय करें उनको भी विश्वविद्यालय एवं विषय की संक्षिप्त जानकारी दिया जाय। लोगों को एक नयापन लगे ये एहसास कराया जाए कि कृषि छात्रों द्वारा आपके वास्तविक स्थिती का आंकलन आपके साथ ही किया जा रहा है, इस अभ्यास की खूबी है कि गाँव में आपके साथ कार्यों की ऐसी सूचना तैयार की जायेगी और तैयार की गयी सूचना के अनुरूप एवं आवश्यकतानुसार ही संसाधन, खाद, बीज, एवं तकनीकी व्यवस्था जानकारी दी जायेगी तथा आपके साथ कृषि जागरूकता कार्य अनुभव के तहत 91 दिन तक आपके साथ रहकर आपके बीच कृषि विकास की आवश्यकतायें, सम्भावनाऐं तय करेंगे।

ध्यान रहें–

हम कोई सुविधायें देंगे इस तरह की जानकारी ग्रामवासियों को लालच के रूप में नहीं होना चाहिये अन्यथा जुड़ाव व सहभागिता में सुविधापूरक दृष्टिकोण हो जायेगा और कृषक अपने को योजना लाभ की बात सुनने तक ही सीमित कर लेगें और सूचनायें वास्तविक नहीं रह पायेगी। उपस्थित लोगों से दूसरे दिन के अन्त में कहना है कि आपके गाँव की सूचनायें सही मिले तथा कार्य योजना सही तैयार हो सके, आप सभी लोग साथ बैठकर अपनी सूचनायें तैयार करायें। ऐसा तय कर तीसरे दिन मुख्य गाँव में पुनः बैठेंगे। उसमें मजरा के भी कुछ लोग सम्मिलित होने हेतु प्रेरित कर ऐसा तय कराकर टीम के साथ मजरा ग्राम से वापसी हेतु दूसरा मार्ग तय करेंगे। जिससे गाँव के दूसरे दिशा की कृषि क्षेत्र एवं भौगोलिक स्थिति का ज्ञान हो सके और वापस अपने गन्तव्य स्थान की ओर प्रस्थान करेंगे।

दूसरे दिन तक गाँव की सामाजिक एवं भौगोलिक स्थिती की जानकारी हो जाना चाहिये तथा किसान उत्पादक संगठन संचालन हेतु सहभागी सूचना देने हेतु ग्रामवासियों को तैयार कर लेना हैं।

तीसरे दिन का अभ्यास

तीसरे दिन गाँव का "सामाजिक एवं संसाधन मानचित्र" तैयार करेगें

गाँव का सामाजिक एवं संसाधन मानचित्र तैयार करने की विधा (Social and Resource map) –

ये मानचित्र तैयार होने से गांव की वास्तविक जानकारी एकत्रित करने में बल मिलेगा। रावे कृषि छात्र एवं ग्रामवासी मिलकर **''निरक्षर भी अक्षर कर सकें''** टूल के माध्यम से प्रारम्भ करते है। मानचित्र बनाने के पूर्व उपयोगिता की जानकारी पूरी तरह से करा दी जाये, जिससे उपस्थित लोग पूर्णतया एकाग्र मन से रूचि लेकर मानचित्र तैयार करा सकें।

गाँव की आवासीय स्थिती एवं गाँव में उपलब्ध प्राकृतिक एवं तैयार किये गये संसाधनों भूमि स्थलाकृति, कृषि भूमि उपयोग का चित्रण एक चार्ट पेपर में करेंगे– गोला बनाकर रास्ता रेखाओं द्वारा, खंडजा दो रेखायें काटकर आदि स्थानीय स्थिति एवं सामग्री के अनुरूप चिन्हांकन तय कर लेंगे और ग्रामवासियों द्वारा ही यह चित्रण करायेंगे मतलब है कि कलम कृषकों को दे देगें तथा हम केवल उनके साथ कार्य करेंगे अभ्यास में सम्मिलित सदस्यों की रूचि एवं लगाव बना रहे ध्यान रखना है।

रूचि एवं लगाव बना रहे, ध्यान रखने योग्य बातें

इस मानचित्र में अभ्यास में उपस्थित लोगों में उदासीनता न आये, इसके लिये ध्यान रखते है कि –

जब मुख्य गाँव का मानचित्र बन रहा हो तो मजरा के लोगों को सम्मिलित होने हेतु बाध्य न किया जाये।

- जिस मुहल्ले का चित्रण हो रहा हो उस मुहल्ले के लोगों को अधिक व्यस्त रखा जाये।
- प्रत्येक ग्रामवासी को मानसिक एवं शारीरिक रूप से सम्मिलित रखा जाये।
- बीच–बीच में भ्रमणकाल के अनुभव व्यक्ति का नाम इंगित करते हुये सम्मिलित करते रहे।
- बीच–बीच में किये जा रहे चित्रण का सत्यापन सभी से कराते रहें।
- एक अभ्यास को एक समय पर पूरा करने को समझायें– इसको पूरा कर चार्ट पर पैन से उतार लिया जाये।

मानचित्र बनाने वाले लोगों से जगह सुनिश्चित कर एक जगह बैठकर कृषि तकनीकी के महत्व एवं विभिन्न जानकारी लेने वाले बिन्दुओं पर जानकारी देने हेतु करें तथा गाँव में वास्तविक एवं टिकाऊ कृषि विकास कैसे हो पर चर्चा करें। परन्तु चर्चा राजनीतिक एवं विवादित न होने पाये कृषि विकासपरक चर्चा में ही केन्द्रित रखा जाये और गाँव के बड़े बुर्जुगों से अनुभव, कहानी सुनाने हेतु प्रेरित करें। आपका उद्देश्य ये रहे कि गाँव में जो कृषि विकास से संबधित बाते व कृषि कार्य संचालित करना है उसके अनुरूप सम्भावनाओं आवश्यकताओं, तकनीकी अन्तर आदि विषयों पर सहभागी सूचना मिल सके।

हम बैठकर जानकारी संकलन करेंगे कि– गाँव की आज से याददाश्त के अनुसार लोगों से जितने अधिक पीछे सालों की जानकारी दे सकें तब से आज तक की विभिन्न क्रियाकलापों, घटनाओं, कृषि प्रणाली परिवर्तन, रीति रिवाज जो गाँव के आर्थिक एवं सामाजिक विकास कम या अधिक करने में उत्तरदायी हो का तुलनात्मक संकलन तैयार कर लिया जाये। जिसके अनुरूप योजना की कार्य योजना तैयार हो सके और आगे के लिये गाँव का एक संकलन सुरक्षित हो सके। इस सूचना को एकत्र करने की विधा को समय रेखा (Time line) टूल कहेंगे।
निम्नलिखित बिन्दुओं पर जानकारी संकलित करेंगे –

प्रारूप

क्र0सं0	सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन	समय रेखा	
		कब से कब तक	
1	स्कूल		
2	सड़क		
3	बिजली		
4	फसल प्रणाली		
5	पशुपालन		
6	अन्य जो भी विषय हो		

भूमि – गांव में उपलब्ध भूमि की स्थिति पर बिन्दुवार पर निम्नलिखित जानकारी लेंगे।

1. कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (हे0)।
2. कुल फसल आच्छादित भूमि एक फसली, दो फसली।
3. समस्या ग्रस्त भूमि की स्थिति, ऊसर भूमि (हे0), जलमग्न, बीहड़ क्षेत्र (हे0)
4. अनवांटित भूमि (हे0)
6. वन विभाग (हे0)
7. अन्य कारणों एवं उपयोग न होने हेतु आच्छादित भूमि (हे0)।
8. फसलवार क्षेत्रफल, उत्पादकता एवं उत्पादन बढ़ाने की संभावनओं की जानकारी लेंगे।

उपरोक्त आंकड़े लगभग में होंगे। जिसका सत्यापन भू – अभिलेख रिकार्ड से करके वहीं पर वास्तविक स्थिती का सत्यापन करा सकते है।

भूमि उपयोग प्रभाव एवं कारण– गाँव में भूमि उपयोग किस प्रकार से हो रहा है एवं इसका प्रभाव क्या है संकलित जानकारी लेंगे। एक फसली क्षेत्र, कम उत्पादकता एवं विविधीकरण आदि न होने के कारण की जानकारी भी प्राप्त करेंगे।

भूमि उपयोगिता– गांव की कृषि भूमि के जितने क्षेत्रफल में खेती की जा रही है उसका मौसम के अनुसार किस फसल से कितना क्षेत्रफल आच्छादित होता है इसकी जानकारी खरीफ, रबी, जायद की सूचना लेते है। फसल के अनुसार क्षेत्र प्रतिशत के अनुसार आना (जैसे – धान 50 प्रतिशत क्षेत्र में ज्वार, मक्का – 20 प्रतिशत, खाली 30 प्रतिशत के अनुसार आंकड़े संकलित करेंगे।

फसल उपयोगिता– फसल उपयोगिता में फसल चक्र परिवर्तन की जानकारी लेते है। जिसमें चार कालम का प्रारूप बनाकर सूचना लेगें।

क्र0सं0	पूर्व में (जितना पहले का हो सके) फसल प्रणाली	वर्तमान में फसल प्रणाली	फसल प्रणाली परिवर्तन का कारण

पहले कौन –कौन फसल चक्र के अनुसार खेती की जाती थी। वर्तमान में कौन से फसल चक्र अपनाये जा रहे है और जो परिवर्तन हुआ है किस कारणों से हुआ है।
इन्हीं जानकारियो के साथ अगले दिन की कार्य योजना तय करके तीसरे दिन का अभ्यास समाप्त करेंगे।

चौथे दिन का अभ्यास

मुख्य गाँव से सुबह जल्दी मजरा गाँव जाकर मजरा निवासियों के साथ बैठकर मुख्य गाँव में ली गयी जानकारी की चर्चा मजरा निवासियों के बीच मे भी करते है। यदि कोई जानकारी अतिरिक्त होती है तो उसे भी जोड़ लेते है और अवशेष बिन्दुओं पर जानकारी लेना प्रारम्भ करते है। फसल उपयोगिता के बाद इन बिन्दुओं पर गाँव व मजरावार जानकारी संकलित करते है।

(अ) संसाधन विश्लेषण– इसमें भूमि, पशुधन, कृषि यन्त्र, पर्यावरण, मनोरंजन, यातायात साधन, भवन आदि इसमें निम्नलिखित प्रारूप प्रयोग करेगें।

क्र0सं0	संसाधन	गांव में (सं0)	मजरो में सं0	कुल

इस प्रकार से क्रमशः भूमि पशु कौन–कौन कितने पर्यावरण में पेड़ पौधे कितने व मनोरंजन साधन की जानकारी संकलित करते है। इस संकलन से गाँव में उपलब्ध संसाधनों का पता चल जायेगा।

(ब) समस्या विश्लेषण– इसमें पहले ग्रामवासियों से गाँव में कौन–कौन सी समस्याएँ है इस पर भी जानकारी लेते हैं इसको भी मजरा, गाँव एवं पुरुष , महिला के अनुसार संकलित करते है। बतायी गयी समस्याओं को समस्या–निस्तारण हेतु ग्रामवासी किस क्रम में चाहते है उनके अनुसार श्रेणीक्रम (RANK) कर देते है।

(स) घटना क्रम– इसके अर्न्तगत ग्राम में पूर्व में जितने समय तक का याद हो को लेकर निम्न कालम पर सूचना संकलित करेगें।

क्र0सं0	घटना	घटना का प्रभाव

गाँव का विकास कम या अधिक करने वाली घटना की जानकारी का संकलन करते है। जैसे– सूखा, आगजनी, पत्थर, ओला पड़ना, महामारी एवं कीट रोग प्रकोप आदि की सूचनायें एकत्र करते है जिससे गाँव में मौसम परिवर्तन एवं प्रभाव की जानकारी होती है तथा घटना की सम्भावनायें होती है।

(द) ऋण व्यवस्था– गाँव की ऋण व्यवस्था किन–किन श्रोतों से की जाती है किस आवश्यकता के लिये एवं किस ब्याज दर में और उसकी वापसी की स्थिती क्या होती है पर जानकारी निम्नलिखित प्रारूप में लेते है। इस पर पूँजी की आवश्यकतायें एवं संभावनायें तय की जायेगी।

ऋण व्यवस्था की जानकारी हेतु प्रारूप

क्र0सं0	ऋण स्त्रोत	आवश्यकता	ब्याज दर	वापसी की स्थिति व प्रभाव

(य) कृषि विश्लेषण प्रणाली– इसके अंतर्गत हम कृषि प्रणाली का विश्लेषण करते है कि पहले कृषि क्रियायें जैसे– जुताई, उर्वरक उपयोग, बुवाई विधि, सिंचाई विधि, बीज शोधन आदि पूर्व में कैसे होता था। आज वर्तमान में क्या हो रहा है और इस परिवर्तन का कारण क्या था तथा परिवर्तन का प्रभाव क्या रहा हेतु सूचना निम्नलिखित कालम बनाकर लेंगे।

क्र0सं0	कृषि प्रणाली	पूर्व में (%)	वर्तमान में (%)	परिवर्तन कारण	प्रभाव

इस विश्लेषण को करने का औचित्य यह है कि पारम्परिक विधि रिवाज से खेती करने की विधि में कितना परिवर्तन आया है और क्यों जिससे संभावनाओं का आंकलन किया जा सकता है तथा कृषि विकास हेतु रणनीति तय करने में बल मिलेगा।

(र) कृषक परिवार की स्थिति आंकलन–

1. **जीविकोपार्जनः–** इसमें ग्राम में उपस्थित कितने किसान जीविकोपार्जन कृषि माध्यम से कर रहे है और कितने किसान अन्य माध्यम से जीविकोत्पार्जन कर रहे है। इसके आंकड़े निकालने के पहले हम परिवार आंकड़े जाति विश्लेषण के आधार प्राप्त करेंगे।

2. **जाति विश्लेषणः–** गाँव में किन–किन जाति के लोग कितनी संख्या में रहते है उनकी जानकारी प्राप्त कर जाति परिवार के अनुसार कृषक परिवारों का जीविकोत्पार्जन का साधन क्या है सूचना एकत्र करते है। जिसके निम्नवत प्रारूप प्रयोग करेगें।

क्र0सं0	जातिवार बस्ती	पारिवारिक सं0	जीविकोपार्जन साधन

3. **किसान आकार–** किसान परिवार भूमि जोत के आधार पर कितने परिवार किस श्रेणी में आते है। जैसे – बड़ा 2 हे0 के ऊपर, लघु कृषक 1 हे0 से 2 हे0 तक, सीमान्त 1 हे0 से कम, भूमिहीन के आंकड़े परिवार संख्या के आधार पर तय करते है।
   कृषकों से जानकारी बीधे में प्राप्त करे व स्थानीय बीधे के अनुसार हैक्टेयर में बदल लें।

(ल) मौसम के अनुसार मजदूरों की व्यस्तता (रोजगार की स्थिति)–

विश्लेषण (पुरूष एवं महिला) इसका आंकलन एक ग्राम के माध्यम से करते है। जिससे पता चलता किस मौसम में पुरूष व किस माह में महिला अधिक व्यस्त रहते है और कृषि कार्य में भागीदारी का स्तर पुरूष एवं महिलाओं का क्या है, पता लगाया जाता है।

सं0	मौसम	कार्य	कार्य एवं भागीदारी		बरसात
			पुरूष	महिला	
1.	बरसात				
2.	जाड़ा				
3.	गर्मी				

गाँव व मजरा में खेती के अलावा कितने तरह के उद्योग धन्धे चलाये जा रहे हैं और कितने परिवार इसमें लगे हुये है । जैसे – भैंस पालन, दुकान, आटा चक्की, दुधाई आदि की जानकारी निम्न लिखित प्रारूप में लेंगे।

क्र0सं0	कृषि व्यवसाय	व्यवसाय से जुड़े परिवार की सं0

(व) बीमारी विश्लेषणः–

बीमारी विश्लेषण पशु एवं आदमी दोनों का करना चाहिये। किस मौसम में कौन–2 बीमारी होती है और इसका प्रभाव क्या होता है। इसकी जानकारी एकत्रित करने का आशय यह है कि स्वास्थ्य रक्षा हेतु कौन–2 प्रबन्धन से कार्यक्रम चलाया जाना आवश्यक है या पशुओं में टीकाकरण कब कराया जाये। इस विश्लेषण के साथ ही फसलों पर लगने वाली मुख्य–मुख्य बीमारियों की जानकारी का संग्रह कर लेने से तकनीकी जानकारी एवं निवेश प्रबन्धन करने में बल मिलेगा।

(स) फसल उत्पादन विश्लेषणः–

फसल उत्पादन विश्लेषण मुख्यतः खरीफ की मुख्य फसल एवं रबी की मुख्य फसल साथ ही धान एवं गेहूँ के अलावा यदि कोई मुख्य फसल है सभी की उत्पादन बढ़ोत्तरी पूर्व से अब तक में कितनी है और किन कारणों से है पता करते है। इसका संकलन का तात्पर्य यह है कि किसान उत्पादक संगठन के प्रभाव से उत्पादन में कितनी बढ़ोत्तरी हुयी। बिक्री व्यवस्था होने कितना लाभ हुआ। इसका आंकलन किया जा सकता है। इसका आंकलन भी यथा स्थिति पर सारणी के माध्यम से करते है।

फसल क्षेत्रफल		उत्पादन (पूर्व में)	बिक्री दर	कहां, कैसे बिक्री करते है?
पूर्व में	बाद में			

(द) बाजार आधारित व्यवसाय व संभावनायें तय करना गाँव में बीज से बाजार कब–

बाजार कब लगती है कहॉ कितनी दूरी पर लगती है तथा क्या–क्या बिकता है तथा बाजार उपलब्धता के अनुसार कृषि विविधीकरण की क्या संभावनायें है, सभी जानकारी प्राप्त करते है तथा किसा फसल उत्पादन की बिक्री कहां करनी है तय करने में बल मिलेगा।

(व) सामाजिक एवं संसाधन मानचित्रः–

ग्राम के मजरा ग्राम के पास या मजरा निवासियों सभी किसानों की उपस्थिति एवं सुझाव के अनुसार कृषि क्षेत्र, अनावंटित क्षेत्र, वन क्षेत्र पूर्व से स्थापित बोरिंग, कुंआ, नहर आदि संसाधनों को चिन्हित कर लेते है। मुख्यतः जल निकास हेतु पूर्व से स्थापित बरसाती नाला चिन्हित कर लेते है। इतना करने के बाद मजरा ग्राम बाहर आयेंगे और वहीं रास्ता तय करेंगे जो उत्पादन पूरक क्षेत्र सुझाया गया है। इससे गाँव की समस्त भौगोलिक स्थिती एवं संसाधन तथा संसाधनों की दिशा एवं स्थिति की जानकारी रेखांकित एवं अंकित की जायेगी।

पाँचवे दिन का अभ्यास

हम पाँचवे दिन पुनः मुख्य गाँव में सुबह जल्दी 8 बजे तक उस मार्ग से होते हुये जहाँ पर कृषि क्षेत्र है और गाँव में भी वहाँ से प्रवेश करते है कि समस्त मुहल्ले होते हुये उस स्थान पर पहुँचे जहाँ पर प्रथम दिन अभ्यास शुरू किया गया था और गाँव के अन्दर मिलने वाले लोगों को साथ में चलकर एकत्रित होने को कहते चलेंगे। इस भ्रमण को हम **"ट्रांजेक्ट वाक"** कहेंगे जो बतायी एवं दर्शायी गयी सूचनाओं का नजरी सत्यापन हेतु किया जायेगा सामाजिक एवं संसाधन मानचित्र का सत्यापन भ्रमण ट्रांजेक्ट वाक हेतु एकत्रित हुये पुनः एक बार लोगों से एकत्रित होने के मकसद के विषय में चर्चा करेंगे कि ये सब जानकारी आपको ही बनानी है और आपको ही बाद में उपयोग करनी है। अब हम पुनः गाँव के बाहर कृषि क्षेत्र में ऊसर भूमि, ग्राम समाज भूमि, वन विभाग आदि भूमि कहाँ पर है तथा किस क्षेत्र में दो फसली भूमि है किधर एक फसल ही की जाती है व अन्य कारणों से भूमि आच्छादित रहती है कहाँ बोरिंग, कुँआ ,तालाब नहर व अन्य संसाधन की जानकारी लेते है। सभी जानकारी के बाद जल निकास की गाँव में क्या व्यवस्था है और जो व्यवस्था है किस हालत में है, इसका सत्यापन व ध्यान आकर्षित करते रहें लोगो को अधिक से अधिक शामिल करके किया जाये। क्यों कि कृषि एवं पशुपालन की संभावनायें एवं प्रबन्धन की आवश्यकतायें तय करने हेतु ही सामाजिक एवं संसाधन मानचित्र हैं, ये मानचित्र व सूचनाओं का संकलन किया जाय।

जमीन पर बनाये गये चित्रण को चार्ट पर पैन्सिल की सहायता से उतार लेते है और अब बैठते है एक जगह गोला बनाकर बीच में आपकी टीम और एक तरफ ग्रामवासी, अब जिन मुद्दों पर जानकारी एकत्रित किये थे, उसके आधार पर उन्हीं मुद्दों पर जानकारी ग्रामवासी किसान भाईयों के सहयोग से सत्यापित करायेंगे तथा सामाजिक एवं संसाधन मानचित्र हमारे योजना काल के लिये तथा आगामी संचालित होने वाली योजनाओं हेतु प्रयोग हो पाए। अतः सामाजिक एवं संसाधन मानचित्र का चित्रण साफ स्पष्ट एवं बड़ी सावधानी से सुरक्षित कर रखेंगे।

ग्रामीण तकनीकी जानकारी (आई0टी0के0):—

हम फसल के उत्पादन, फसल व पशुओं की बीमारी पर जानकारी संकलित किया है तो इसके निदान के लिये गांव मेंक्या करते है, की जानकारी लेते है।

''ग्रामीण तकनीकी जानकारी'' का मतलब है कि जैसे पशु की बीमारी है, दवा भी गाँव की हो, और दवा देने वाला भी गाँव का हो, तो जो देशी दवाओं के माध्यम से रोग का निदान करते हो, जैसे— बीज शोधन, अंकुरण परीक्षण, दीमक नियंत्रण विभिन्न फसलों का निरीक्षण आदि पर जो भी जानकारी हो उसका संकलन करते है दी गयी जानकारी से कितने लोग सहमत है या करते है, पर सभी से चर्चा करते है, इसको चार्ट पर लिखकर संकलित कर लेते है।

ग्रामीण तकनीकी जानकारी (आई0टी0के0) संकलन हेतु प्रारूप

क्र0सं0	बीमारी का नाम	मरीज (पशु/आदमी)	ग्रामीण (देशी) उपाय

आई0टी0के0 की जानकारी स्वावलम्बी प्रबन्धन हेतु बहुत प्रभावकारी होगी। अन्त में सभी ग्रामवासियों से बतायेंगे कि आप लोग ने पूरे उत्साह के साथ अपने गाँव की जानकारी दी, अब इसको एक संकलन के रूप में संकलित कर आपसे पुनः सत्यापन कराया जायेगा। जानकारी एक जगह मिल जाये और संचालित होने वाली योजना हेतु गाँव में तकनीकी अन्तर (गैप) तथा आवश्यकतायें संभावनायें निर्धारण हेतु प्रयोग की जायेगी। जिससे वास्तविक योजना का क्रियान्वयन हो सके। कृषि विकास कार्यक्रम के क्रियान्वयन समीक्षा/मूल्यांकन चरणों में ये संकलित रिर्पोट काम आ सके तथा क्रियान्वित योजना से गाँव को कितना फायदा हुआ इसकी तुलना हो सकें। पूर्व व बाद में हुये परिवर्तन की तुलना करेंगे।

सी0एस0ए0 सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (सी0एस0ए0 पी0आर0ए0) विधा में तैयार संकलन दस्तावेज गाँव में कभी भी संचालित होने वाली योजनाओं में प्रयोग हो सकती है तो वास्तविक शोध, प्रदर्शन, प्रशिक्षण, उद्योग धन्धे, कृषि व्यवसाय एंव सामाजिक विकास हेतु संचालित योजनाओं के संचालन हेतु इस संकलन से जानकारी ले सकते है। जिससे योजनाओं को कृषकों व ग्राम वासियों द्वारा अपनाया जाये।

कृषि स्नातक छात्र जो पढ़े है उस शिक्षा उपाधि का प्रयोग हेतु कौशल एवं सम्प्रेषण कला एवं लोगो से जुड़ने की कला सीखकर अपने कृषि विषयिक ज्ञान का प्रभावी उपयोग कर सके वे चाहें विभाग में हो या स्वयं खेती करना हो सभी जगह ज्ञान के प्रभावी प्रयोग हेतु ये सहभागी ग्रामीण तकनीकी जानकारी उपयोगी होगी।

कृषि शिक्षा के उपरान्त आपकी कृषि शिक्षा ऐसी व्यवहारिक बन सके जो किसी भी कार्यक्रम, योजना, व्यवसाय से जुड़े या आप कृषि वैज्ञानिक या कृषि अधिकारी बने आपको कार्य योजना, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन को भी रावे गांव में ही जानना आवश्यक है। इसलिए ग्रामीण जागरूकता कार्य अनुभव (रावे) के समय ही रावे ग्राम में तीन बिन्दुओं पर यह कौशल भी प्राप्त कर लें।

कृषि विकास कार्यक्रमों के प्रभावी संचालन के सहभागी 03 चरण

- **योजना काल (Planning Phase)**
- **क्रियान्वयन काल (Implementation Phase)**
- **मूल्यांकन काल (Evaluation Phase)**

योजना काल (Planning Phase)

1. गाँव की यथा स्थिति का आंकलन (फसल, सिंचाई, मृदा, भूमि, पशु आदि का आंकलन)।
2. पी0आर0ए0 सर्वे कृषकों में हर उम्र के लोगों के साथ बैठकर सामाजिक व संसाधन मानचित्र तैयार करना।
3. **SWOT** विश्लेषण गाँव में तय सम्भावनाओं में क्रियान्वयन हेतु कार्यक्रम का जोखिम का आंकलन करना, अवसर, कमजोरी, बल तय करना।
4. दायित्व निर्धारण कृषि क्रियान्वयन की सहभागी तय करना।
5. कम्पोस्ट उत्पादन की वर्तमान स्थिति जैविक हेतु गाँवों में निवेश की स्थिति का आंकलन।
6. किसान उत्पादक संगठन के प्रभावी संचालन।
7. योजना सत्यापन की सामूहिक बैठक करना गांव मं योजना के स्वीकार हेतु सामूहिक बैठक।
8. किसान उत्पादक संगठन किस तरह से क्रियान्वित होगी चरणवार अभिलेखीकरण करवाना।

क्रियान्वयन काल (Implementation Phase)

1. गांव की कृषि परिस्थिति के अनुसार खेती, पशुपालन एवं कृषि व्यवसाय समूह गठित (क्लस्टर) तैयार करना या गठित करना।
2. प्रत्येक के यहां कम्पोस्ट उत्पादन हेतु नाडेपवर्मी कम्पोस्ट हेतु हर घर में, स्थान चिन्हित करना।
3. स्वयं सहायता समूह का गठन (पूँजी स्वावलम्बन) हेतु।
4. पोषण सुरक्षा हेतु प्रत्येक के यहां "पोषक रसोई बागवानी" स्थापित करना।
5. पशुपालन हेतु कृषकों का चिन्हांकन एवं क्रियान्वयन।
6. निवेश उपलब्धता सुनिश्चित कराना।
7. बाजार तक या स्थानीय बाजार उपलब्धता की स्थिति सुनिश्चित करना।
8. खरीफ, रबी, जायद हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम तय करना।
9. प्रदर्शन का फील्ड डे क्लस्टर आधारित उत्पादन को प्रदर्शित करने हेतु एवं विश्वास जागृत करने हेतु फील्ड डे आयोजित कराना।

मूल्यांकन काल (Evaluation Phase)

1. त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक समीक्षा।
2. उत्पादन समीक्षा।
3. बाजार प्रबन्ध समीक्षा।
4. बीज प्रभाव समीक्षा।
5. ग्राम में निवेश उपलब्धता।
6. एफ0पी0ओ0 के क्षेत्र विस्तार स्थिति समीक्षा।

कृषि तकनीकी प्रभाव का तुलनात्मक चित्रण